3 अटूट आत्मविश्वास

पाठ-परिचय

प्रस्तुत **निबंध** में आत्मविश्वास का रहस्य बताया गया है। आत्मविश्वास जीवन की सफलता का सबसे बड़ा रहस्य है। इस तथ्य को लेखक ने इस निबंध में अनेक उदाहरणों द्वारा प्रतिपादित किया है। उसके अनुसार स्वयं व्यक्ति के अतिरिक्त और कोई यह निर्णय नहीं कर सकता कि वह सफल है या असफल, अभागा है अथवा भाग्यवान।

– बाली से कौन लड़ सकता है महाराज?

– क्यों, ऐसी उसमें क्या बात है?

– महाराज, उसे ऐसा वरदान प्राप्त है कि जो उसके सामने आता है, उसकी आधी ताकत उसमें आ जाती है और वह उसे आसानी से पछाड़ देता है।

सुग्रीव ने राम से अपने भाई बाली के संबंध में यह बात कही थी और बात इतनी पक्की थी कि राम भी बाली के सामने आकर नहीं लड़े और उसे पेड़ की आड़ से ही उन्होंने निशाना बनाया।

दूसरे की, सामने वाले की आधी ताकत अपने में खींच लेने की शक्ति का जो वरदान बाली को प्राप्त था, वह हम सबको भी प्राप्त है, पर दुर्भाग्य यह है कि हमने कभी उसका उपयोग नहीं किया। इसलिए विरोधी हमें पीटते रहे हैं और हम उस पीटने को अनिवार्य समझकर पिटते रहे हैं।

सच बात यह है कि जब कोई विरोधी हमारे सामने आता है, तो हम अपनी आत्महीनता से, कायरता से, कुसंस्कार से, आत्मविश्वास की कमी से विरोधी का और अपना बल तौले बिना ही उसे अपने से शक्तिशाली

मान लेते हैं। बस, यही मानना हमारी शक्ति को आधी कर देता है और वह आधी हमारे विरोधी को प्राप्त इस अर्थ में हो जाती है कि हम उससे आधे रह जाते हैं। हममें आत्मविश्वास हो तो उससे हम विरोधी को आत्महीन कर सकते हैं, उसकी आधी शक्ति अपने में ले सकते हैं।

आत्मविश्वास का सबसे बड़ा दुश्मन है दुविधा, क्योंकि दुविधा एकाग्रता को नष्ट कर देती है। आदमी की शक्ति को बाँट देती है। बस वह आधा इधर और आधा उधर, इस तरह खंडित हो जाता है।

मेरे एक मित्र अपनी पत्नी के साथ जंगल में एक पेड़ के नीचे बैठे बात कर रहे थे। बात करते-करते पत्नी सो गई, वह उपन्यास पढ़ने लगे। अचानक उन्हें लगा कि सामने से भेड़िया चला आ रहा है — उन्हीं की तरफ़। भेड़िया, एक खूँखार जानवर। वह इतने घबरा गए कि पत्नी को सोता छोड़कर ही भाग खड़े हुए। भाग्य से कुछ दूर ही उन्हें एक बंदूकधारी सज्जन मिल गए। वह उनके पैरों में गिर पड़े, "मेरी पत्नी को बचाइए, भेड़िया उसे खा रहा है," वह गिड़गिड़ाए।

शिकारी दौड़ा-दौड़ा उनके साथ पेड़ के पास आया, तो उनकी पत्नी यथापूर्व सो रही थी और 'भेड़िया' उसके पास रखी टोकरी में मुँह डाले पूरियाँ खा रहा था।

"कहाँ है भेड़िया?" शिकारी ने बंदूक साधते हुए पूछा — तो काँपते हुए वह बोले — "वह है तो सामने।" शिकारी बहुत ज़ोर से हँस पड़ा — "भले मानस, वह बेचारा कुत्ता है" क्या बात हुई यह? वही कि उन्हें भय ने आत्मविश्वासहीन कर दिया।

कृष्ण ने महाभारत में सर्वोत्तम काम यही किया कि पांडवों को उन्होंने आत्मविश्वास से भर दिया। वह अपने कार्य के महत्त्व को समझते थे, तभी तो पूरे आत्मविश्वास के साथ उन्होंने अर्जुन से कहा था — "परेशान मत हो, युद्ध कर , तू निश्चित रूप से युद्ध में अपने शत्रुओं पर विजय पाएगा।"

नेताजी सुभाष चंद्र बोस जब आई०सी०एस० की प्रतियोगिता में बैठे, तो अंग्रेज़ी परीक्षक ने पूरी तेज़ी से घूमते हुए बिजली के पंखे की ओर इशारा कर उनसे पूछा, "क्या इसकी पंखुड़ियाँ गिनी जा सकती हैं?" सुभाष बाबू ने झट से पंखा बंद कर दिया और बोले, "जी हाँ, सुगमता के साथ!"

परीक्षक प्रसन्न हो गया, पर उसने उन्हें एक बार और कसौटी पर कसा। उसने अपनी अँगूठी उनके सामने रखकर पूछा, "क्या इसमें से सुभाष चंद्र बोस पास हो सकता है?" सुभाष बाबू ने अपने नाम का विज़िटिंग कार्ड मोड़कर उसमें से पास करते हुए कहा, "जी, इस तरह!" यह है अटूट आत्मविश्वास। इसके अभाव में यदि वह घबरा जाते और ऊटपटाँग जवाब देते, तो फेल हो जाते।

दूसरे हमारी क्षमता का विश्वास करें और हमारी सफलता को निश्चित मानें। इसके लिए आवश्यक शर्त यही है कि हमारा अपनी क्षमता और सफलता में अखंड विश्वास हो। हमारे भीतर उगा भय, शंका और अधैर्य ऐसे डायनामाइट हैं, जो हमारे प्रति दूसरों के विश्वास को खंडित कर देते हैं।

हमारे विद्यालय में, जो नगर से दूर जंगल में था, चौदह वर्ष का एक बालक अपने घर से अकेला पढ़ने आया करता था। कुछ महीने बाद दूसरा बालक भी उसके साथ आने लगा। वह दूसरा बालक बहुत डरपोक था। वह उसे भूतों और चोरों की कहानियाँ सुनाया करता। इसका ऐसा प्रभाव पड़ा कि पहला बालक भी डरपोक हो गया और वे दोनों मेरी प्रतीक्षा करते रहते कि मैं चलूँ, तो वे भी मेरे साथ चलें।

सूत्र यह बनता है — हतोत्साहियों, निराशावादियों, डरपोकों और सदा असफलता का ही मर्सिया पढ़ने वालों के संपर्क से दूर रहो। नीति का वचन है कि जहाँ अपनी, अपने कुल की और अपने देश की निंदा हो और उसका मुँह तोड़ उत्तर देना संभव न हो, तो वहाँ से उठ जाना चाहिए। क्यों? क्योंकि इसमें आत्मगौरव और आत्मविश्वास की भावना खंडित होने का भय रहता है।

बहुत-से मनुष्य यह सोच-सोचकर कि हमें कभी सफलता नहीं मिलेगी, दैव हमारे विपरीत है, अपनी सफलता को अपने ही हाथों पीछे धकेल देते हैं, उनका मानसिक भाव सफलता और विजय के अनुकूल बनता ही नहीं, तो सफलता और विजय कहाँ! यदि हमारा मन शंका और निराशा से भरा है, तो हमारे कामों का परिणाम भी निराशाजनक ही होगा, क्योंकि सफलता की, विजय की, उन्नति की कुंजी तो अविचल श्रद्धा ही है।

क्या मैं अभागा हूँ?

क्या मैं भाग्यवान हूँ?

इन प्रश्नों का सही उत्तर जानने के लिए किसी ज्योतिषी से पूछने की आवश्यकता नहीं। इसके लिए तो आप अपने से ही पूछिए कि आप अपने को अभागा अनुभव करते हैं या भाग्यवान? अभागा अनुभव करते हैं तो कोई आपको भाग्यवान नहीं बना सकता और भाग्यवान अनुभव करते हैं, तो कोई आपको अभागा नहीं बना सकता।

अपने मन को सफलता, विजय, सौभाग्य और श्रेष्ठता के विचारों और भावनाओं से सदा भरपूर रखिए और सफलता, विजय, सौभाग्य और श्रेष्ठता की ओर आगे बढ़ते रहिए।

जीवन में उतार भी हैं और चढ़ाव भी। जो लोग हमेशा उतार की ही बात सोचते हैं, वे उन लोगों की तरह हैं जो कूड़ाघरों के पास कुरसी बिछाकर बैठ जाते हैं और शहर की गंदगी को गाली देते हैं।

जन्म से अंधी-बहरी, पर विचारक और लेखिका के रूप में विश्वविद्यालय हेलेन केलर की यह सूक्ति

सदा याद रखिए कि "सुख का एक द्वार बंद होने पर तुरंत दूसरा खुल जाता है लेकिन कई बार हम उस बंद द्वार की ओर इतनी तल्लीनता से ताकते रहते हैं कि हमारे लिए जो द्वार खोल दिया गया है, हम उसे देख ही नहीं पाते।"

युद्ध में वे विजयी नहीं होते, जो खंदक-खाइयों को ताकते-झाँकते हैं। विजयमाला पड़ती है उनके गले, जो अपनी संपूर्ण शक्ति को तौलकर छलाँग लगाते हैं, खतरों से खेलते हैं। जीवन के इस अनुभव को कभी मत भूलिए —

जो हड़बड़ा के रह गया वो रह गया इधर।
जिसने लगाई एड़ वो खंदक के पार था।

जीवन-परिचय

कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'
(1906-1995)

कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' का जन्म सन् 1906 ई० में सहारनपुर जिले के देवबंद कस्बे में हुआ था। इनके पिता पं० रामदत्त मिश्रा कर्मकांडी ब्राह्मण थे। इनके घर की आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण इनकी आरंभिक शिक्षा ठीक प्रकार से नहीं हो पाई थी। हिंदी के श्रेष्ठ निबंधकारों, रेखाचित्रकारों और संस्मरणकारों में प्रभाकर जी का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। 9 मई, 1995 को इस महान साहित्यकार का निधन हो गया।

'ज़िंदगी मुस्कराई', 'बाजे पायलिया के घुँघरू', 'माटी हो गई सोना', 'दीप जले-शंख बजे', 'आकाश के तारे', आदि इनकी उल्लेखनीय कृतियाँ हैं। इनके अतिरिक्त 'महके आँगन चहके द्वार' इनकी अत्यंत महत्त्वपूर्ण रचना है।

शब्द- संपदा

पछाड़ देना = हरा देना। **आड़** = ओट, सहारा। **आत्महीनता** = आत्मिक निर्बलता, मन में हीन भावना। **कुसंस्कार** = बुरी आदत, बुरे संस्कार। **एकाग्रता** = तल्लीनता। **खूँखार** = डरावना, भयानक। **अखंड** = जिसके टुकड़े न हों, संपूर्ण। **खंडित** = टुकड़े-टुकड़े। **हतोत्साह** = हत + उत्साह = निरुत्साह, जिसका उत्साह क्षीण हो गया हो। **मर्सिया** = किसी मृत व्यक्ति की याद में लिखा शोक गीत। **अविचल** = स्थिर, अटल। **खंदक** = खाई, गहरा गड्ढा।

अभ्यास प्रश्न

निबंध से ....

1. दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर के सामने ✓ लगाइए :

क. हम अपने विरोधी को किसके द्वारा आत्महीन कर सकते हैं?

(i) आत्मविश्वास के द्वारा।	☐	(ii) एकाग्रता के द्वारा।	☐
(iii) कुसंस्कार के द्वारा।	☐	(iv) कायरता के द्वारा।	☐

ख. लेखक का मित्र अपनी पत्नी को सोता छोड़कर ही जंगल से क्यों भाग गया?

(i) मित्र उपन्यास पढ़ते-पढ़ते डर गया। ☐ (ii) मित्र को लगा कि सामने से भेड़िया आ रहा है। ☐

(iii) मित्र के अंदर का आत्मविश्वास समाप्त हो गया। ☐ (iv) भय ने उसे आत्मविश्वासहीन कर दिया। ☐

ग. सुभाष चंद्र बोस ने आई० सी० एस० प्रतियोगिता किस आधार पर उत्तीर्ण की?

(i) ऊटपटाँग उत्तर देकर। ☐ (ii) अटूट आत्मविश्वास के बल पर। ☐

(iii) अपने अखंड विश्वास को छोड़कर। ☐ (iv) उपर्युक्त में से कोई नहीं। ☐

घ. पहला बालक भी डरपोक क्यों हो गया?

(i) दूसरे बालक से चोरों की कहानियाँ सुन-सुनकर। ☐

(ii) दूसरा बालक डरपोक और भूतों की कहानियाँ पढ़ता था। ☐

(iii) दूसरे बालक के संग खेल-खेलकर। ☐

(iv) दूसरे बालक से भूतों और चोरों की कहानियाँ सुन-सुनकर। ☐

ङ. युद्ध में कैसे लोग विजयी होते हैं?

(i) जो खंदक-खाइयों को ताकते-झाँकते हैं। ☐

(ii) जो तल्लीनता से ताकते रहते हैं। ☐

(iii) जो अपनी संपूर्ण शक्ति को तौलकर छलाँग लगाते हैं और खतरों से खेलते हैं। ☐

(iv) जो खतरों से खेलने को हरदम तैयार रहते हैं। ☐

2. दिए प्रश्नों के विस्तृत उत्तर लिखिए :

क. लेखक अपने विद्यालय के दो छात्रों का उदाहरण देकर क्या सिद्ध करना चाह रहा है?

ख. लेखक हेलेन केलर का उदाहरण देकर क्या समझाना चाह रहा है?

ग. लेखक ने जीवन को युद्ध क्यों माना है और उसमें जीत किसके हाथ लगती है?

घ. व्यक्ति को कैसे पता चल सकता है कि वह अभागा है या भाग्यवान?

ङ. अँगूठी के संबंध में पूछे गए प्रश्न के क्या-क्या जवाब हो सकते थे?

3. आशय स्पष्टीकरण :

क. हमारे भीतर उगा भय, शंका और अधैर्य ऐसे डायनामाइट हैं, जो हमारे प्रति दूसरों के विश्वास को खंडित कर देते हैं।

ख. हतोत्साहियों, निराशावादियों, डरपोकों और सदा असफलता का ही मर्सिया पढ़ने वालों के संपर्क से दूर रहो।

ग. हमेशा उतार की बात सोचने वाले लोग उन लोगों की तरह हैं जो कूड़ाघरों के पास कुरसी बिछाकर बैठ जाते हैं और शहर की गंदगी को गाली देते हैं।

4. किसने, कहा किससे?

क. "बाली से कौन लड़ सकता है महाराज?" ______________

ख. "भले मानस, वह बेचारा कुत्ता है।" ______________

ग. "परेशान मत हो, युद्ध कर, तू निश्चित रूप से युद्ध में अपने शत्रुओं पर विजय पाएगा।" ______________

घ. "क्या इसकी पंखुड़ियाँ गिनी जा सकती हैं?" ______________

ङ. "सुख का एक द्वार बंद होने पर तुरंत दूसरा खुल जाता है।" ______________

5. विचार कौशल :

क. लेखक ने हमारे भीतर के भय, शंका और अधैर्य को डायनामाइट क्यों कहा है? अपने विचार लिखिए।

ख. लेखक के मित्र के घबरा उठने का क्या कारण था? आपकी दृष्टि में उसका व्यवहार कहाँ तक ठीक था?

भाषा से........

1. संधि-विच्छेद कीजिए :

दुर्भाग्य – ______________ सज्जन – ______________ सर्वोत्तम – ______________

हतोत्साहित – ______________ नैतिक – ______________ सूक्ति – ______________

2. वर्तनी शुद्ध करके लिखिए :

दुभागय – __________ दुशमन – __________ पत्नि – __________ खूखार – __________

छमता – __________ परतीक्षा – __________ ज्योतिषि – __________ खण्दक – __________

3. पर्यायवाची शब्द लिखिए :

पेड़ – __________ __________ __________ दुश्मन – __________ __________ __________

जंगल – __________ __________ __________ बिजली – __________ __________ __________

रचनात्मक गतिविधियाँ

1. केवल आत्मविश्वास हमें परीक्षा में सफलता दिला सकता है।' इस विषय पर कक्षा में तर्क-वितर्क कीजिए।
2. आत्मविश्वास से संबंधित कोई अन्य उदाहरण अपने मित्रों को दीजिए।